परोपकाराय सतां विभूतयः

श्री

जैन हितबोध.

नैतिक विषयोसें भरपूर

शांत मूर्ति मुनिराज श्री वृद्धिचंद्रजीके
शिष्याणु मुनि कर्पूरविजयजी विरचित

स्वधर्मी भाइओ व्हेनोकों पढनेके लीये
श्री सुरत निवासी झवेरी देव चंद लालभाईकी
लडकी व्हेन वीजकोरबाइ तरफसें भेट
हिंदी गिरामे भाषांतर कराके छपाके प्रसिद्ध कर्त्ता

श्री जैन श्रेयस्कर मंडल म्हेसाणा
अमदावाद

श्री सत्यविजय प्रीन्टींग प्रेस–पांचकुवा नवा दरवाजा
संवत १९६४ सने १९०८ वीर संवत २४३४